















## आम को बाजार मिले

आज भले ही खूंटी, गुमला, लोहरदगा सहित लगभग पूरे झारखंड में मालदा, आप्रपाली, गुलाबखस, लंगड़ा सहित आम की लगभग तमाम वैरायटी मौजूद हैं। पर 10-12 साल पहले इस क्षेत्र के लोग आम के नाम पर सिर्फ बीजू आम को ही जानते थे। पूरे आम बाजार में बीजू आम का शेयर 70 फीसदी से अधिक हुआ करता था। पूरे क्षेत्रीय बाजार में आम का दबदबा हुआ करता था। यहां के बीजू आम का स्वाद बिहार, बंगाल, ओडिशा से लेकर नेपाल तक के लोग लेते थे। मालदा, लंगड़ा जैसे आम सिर्फ बड़े शहरों में मिलते थे। झारखंड खासकर गुमला, खूंटी, सिमडेगा, लोहरदगा, पलामू सहित कई अन्य क्षेत्रों के ग्रामीणों के लिए बीजू आम आय का अतिरिक्त साधन भी है। आमतौर पर गांव के बीजू आम के बगीचों में पूरे गांव वालों का अधिकार होता है। इसलिए पेड़ों पर फले आम का लाभ पूरे गांव के लोग उठाते हैं। अभी आम पकने लगे हैं और गांववाले बगीचों से आम चुनकर बाजार में बेचकर अच्छी आमदनी प्राप्त कर रहे हैं। लेकिन पर्यावरण असंतुलन, आम पेड़ों की अंधाधुंध कटाई के कारण बीजू आम का उत्पादन घटता जा रहा है। झारखंड में बीजू आम के उत्पादन में कमी के संबंध में आत्मा के उप परियोजना निदेशक का मानना है कि जलवायु परिवर्तन के कारण मौसम में काफी फेरबदल होता है। इससे उत्पादन घट सकता है।

हुआ हा इसके कारण अब बसत  
ऋग्मि में सभी आम पेड़ों पर मंजर  
नहीं आ पाते। इसके अलावा  
अनावृष्टिएं ओलावृष्टि और तेज हवा के कारण आम के मंजर और  
टिकोरे बर्बाद हो जाते हैं। इसके अलावा समय पर बारिश नहीं होने  
से मधुवा सहित कई तरह के रोगों का प्रकोप आम के मंजर बढ़ जाता  
है। एक बड़े बीजू आम के पेड़ पर आठ से दस क्विंटल फल का  
उत्पादन होता है। लेकिन पर्यावरण प्रदूषण के कारण अब उत्पादन  
घटकर लगभग तीन से चार क्विंटल हो गया है। यदि आम की  
प्रोसेसिंग की जाये, तो इससे ग्रामीणों को लाभ हो सकता है। बीजू  
आम से अचार, अमचूरये अमावट सहित कई तरह के उत्पाद बनाये  
जा सकते हैं। इससे ग्रामीणों को आर्थिक लाभ तो होगा ही आम बर्बाद  
भी नहीं होगे। कई महिला स्वयं सहायता समूह इस दिशा में  
सकारात्मक पहल भी कर रहे हैं। कोरोना काल के दौरान वाहनों का  
परिचालन नहीं होने एवं पर्यावरण संतुलन में सुधार के कारण बीजू  
आम का बफ्फर उत्पादन हुआ था। बेहतर पर्यावरण और समयानुकूल  
वर्षा के कारण 2019-20 में इस क्षेत्र में बीजू आम का रिकॉर्ड  
उत्पादन हुआ था। आम का उत्पादन बढ़ाकर कई किसान अपनी  
स्थिति को सुधार रहे हैं। खासकर झारखण्ड में इसकी अपार  
संभावनाओं से इनकार नहीं किया जा सकता है। इसके कई कारणों  
में यहां की धरती की बनावट इसके अनुकूल है। इसके देख रेख के  
लिए भी बहुत अधिक मेहनत की जरूरत नहीं है। अपने खेतों को  
पशुओं से बचाव के लिए काटेदार घेरे से किया जा सकता है। समय  
पर पानी उपलब्ध कराते रहने की जरूरत है। पौधा जब बड़ा हो जाये  
तो कोई टेंशन की बात नहीं है। कमाई के लिए किसानों के पास यह  
एक बड़ा मौका है। ऐसे में यहां के किसानों को इस ओर ध्यान देने  
की जरूरत है। इससे उनकी आमदानी में जहां इजाफा होगा, वहीं इन्हें  
किसी दूसरे पर निर्भर भी नहीं रहना होगा। इस बाबत पलामू के  
चेड़ाबार किसान टीपी सिंह ने बताया कि आम की फसल उगा कर  
वह जहां अपनी आमदानी बढ़ा लिये हैं, वहीं अपनी बेटियों की शादी  
भी किये। इसलिए मैं तो कहूँगा कि हर किसान आम की खेती करे।

# बहाने याद आये वीर बंदा बैरागी के

इस समय राष्ट्रीय स्तर पर चल रहे कई विषयों में से एक फ़िल्म 'आदिपुरुष' की चर्चा भी है। चर्चा के केंद्र में फ़िल्म से अधिक इसके संवाद लिखने वाले मनोज मुंतशिर हैं, जिनकी रचनाएं पिछले दिनों राष्ट्रीय चेतना जागरण के संदर्भ में देश भर में चारों ओर सुनाई देती रही हैं। अभी भी देश में अनगिनत लोग ऐसे मिल जायेंगे जिनके मोबाइल की रिंगटोन मनोज मुंतशिर के लिखे किसी गाने के मुखड़े से शुरू होती है। यहां बात फ़िल्म 'आदिपुरुष' में लिखे संवाद पर विवाद की हो या बजरंगबली को उनके द्वारा प्रभु श्रीराम के अनन्य भक्त कहे जाने पर, जो भी हो। फ़िल्हाल सबत्र उनसे जुड़ा विवाद इतना गहराया हुआ है कि कल तक उनके जो समर्थक रहे, आज वह उनसे नाराज हैं। उनके लिए जो नहीं कहा जाना चाहिए, वह तक कहा जा रहा है। कुछ हद तक यह स्वभाविक भी लगता है। क्योंकि जिस जनता ने इन्हें नाम और पहचान दी, वही आज उनसे नाराज होने का हक भी रखती है। क्योंकि जिससे उम्मीद ना हो यदि वह ऐसा कुछ कर गुजरे जो उसे नहीं करना था तो स्वभाविक परिणाम ऐसे ही आते हैं। देखा जाए तो मनोज मुंतशिर इस समय बहुत बुरे दौर से गुजर रहे हैं। उनकी कही हर बात के समानार्थी दूसरे अर्थ भी निकाले जा रहे हैं। हर कोई जहां देखो वहां, उन्हें कटघरे में खड़ा करता हुआ नजर आ रहा है। किंतु इस सबके बावजूद कहना होगा कि थोड़ा ठहरिए! समग्रता से विचार करिये हम जो मनोज मुंतशिर को लेकर सोच रहे हैं, उसमें कितनी सच्चाई है? हो सकता है वे तथाकथित सेक्युलरिज्म के शिकार हो गये हों। मुंबई जैसे बड़े महानगर में यहां भी हो सकता है कि सिनेमा जगत से जुड़े उनके किसी साथी ने उन्हें नया करने के लिए कहा हो और वह इस फ़िल्म के अनेक संवादों में कुछ ऐसे संवाद प्रयोगात्मक रूप से लिख गए, जो अब उनके आलोचना का कारण बने हुए हैं। वस्तुतः मनोज मुंतशिर के साथ अभी जो घट रहा है उसको लेकर बीर बंदा बैरागी का समय याद आ गया। इतिहास में जो उनके साथ घटा दूसरे अर्थों में ऐसा ही कुछ इस लेखक के साथ हो रहा है बंदा बैरागी एक ऐसा नाम जिसने उत्तर भारत के क्षेत्र में अपने समय के उस मिथक को तोड़ दिया था कि आतंक के प्रतीक मुगलों पर कभी भी विजय प्राप्त नहीं की जा सकती। बंदा बैरागी ने तत्कालीन समय में हिन्दू एवं सिखों को साथ लेकर एक ऐसी सेना का गठन किया, जिन्होंने न केवल खालिसकार पंथ की नींव को मजबूत किया बल्कि मुगल सेना को भी सशक्त योजना से जीता था। आज कर्म पंजाब, हरियाणा, जम्मू-कश्मीर, हिमाचल समेत पाकिस्तान में जहां चुका बहुत बड़ा क्षेत्र इस बात का गवाह है कि बंदा बैरागी अजय योद्धा में रूप में मुगलों के सामने खड़े थे, जिन्हें झुकाना और हराना मुगलों के लिए संभव नहीं हो रहा। इनका पराक्रम इतना अधिक रहा कि शाहबजादों की शाहादत का बदला इन्होंने लिया। गुरु गोविन्द सिंह द्वारा संकलित प्रभुसत्ता 'खालिसा राज' की राजधानी लोहगढ़ में सिख राज्य की नींव रखी। गुरु नानक देव और गुरु

देखा जाए तो मनोज  
मुंतशिर इस समय बहुत  
बुरे दौर से गुजर रहे हैं।  
उनकी कहीं हर बात के  
समानार्थी दूसरे अर्थ भी  
निकाले जा रहे हैं। हर  
कोई जहां देखो वहां, उन्हें  
कटघरे में खड़ा करता  
हुआ नजर आ रहा है।



# देश-विदेश

१८

गोबिन्द सिंह के नाम से सिक्खों  
और मोहरें जारी की, निम्न वर्ग के  
लोगों की उच्च पद दिलाया और  
अपने समय में हल वाहक  
किसान-मजदूरों को जमीन का  
मालिक बनाया। अन्यथा और  
अत्याचार के विरुद्ध एवं सत्य के  
लिए सदैव डटकर खड़े रहनेवाले  
एक वीर योद्धा के रूप में उनका  
इतिहास में महत्व कितना अधिक  
है, यह गुरुदेव रवींद्र नाथ टैगेर,  
वीर सावरकर तथा मैथिलीशरण  
गुप्त द्वारा उन पर लिखी कविताओं  
से लगाया जा सकता है।

# दुनिया की सबसे बड़ी खेल प्रतियोगिता है ओलम्पिक



A portrait photograph of a middle-aged Indian man with dark hair and a well-groomed mustache. He is wearing a dark blue, button-down shirt. The background is slightly blurred, showing what appears to be an indoor setting with shelves or displays.

यागश कुमार गायत्री

हुआ, जिसके प्रथम अध्यक्ष के रूप में ग्रीस के डेमोट्रियोस विकेलास का चयन हुआ। प्रथम ओलम्पिक खेलों के आयोजन के लिए एथेस को चुना गया और इसकी तैयारियां शुरू हुईं। 5 अप्रैल 1896 को प्रथम आधुनिक ओलम्पिक खेलों की शुरूआत हुई। प्रथम आधुनिक ओलम्पिक खेलों का उद्घाटन 5 अप्रैल 1896 को एथेस (यूनान) में किंग जर्ज पंचम द्वारा किया गया। अमेरिका के जेम्स बी. कोनोली को पहले आधुनिक ओलम्पिक खेल में प्रथम ओलम्पिक चैम्पियन बनने का गौरव हासिल है। पहले ओलम्पिक खेल की प्रतियोगिताओं में महिलाओं के भाग लेने पर प्रतिबंध था किन्तु सन् 1900 में दूसरे ओलम्पिक में महिलाओं को भी ओलम्पिक खेलों के जरिये अपनी प्रतिभा का परिचय देने का अवसर मिल गया। प्रथम आधुनिक ओलम्पिक में भाग लेने वाले कुछ खिलाड़ी तो ऐसे भी थे, जो उस वक्त एथेस में ही पर्फर्टक के तौर पर पहुंचे हुए थे। 1896 से ओलम्पिक खेलों का आयोजन नियमित होता रहा है लेकिन प्रथम व द्वितीय विश्व युद्ध के कारण 1916, 1940 तथा 1944 के ओलम्पिक आयोजन रद्द करने पड़े थे। यूनान (ग्रीस), ब्रिटेन, स्विट्जरलैंड, अस्ट्रेलिया तथा फ्रांस ही पांच ऐसे देश हैं, जिन्होंने अब तक हर ग्रीष्मकालीन ओलम्पिक खेलों में हिस्सा लिया है। ओलम्पिक खेलों के उद्घाटन के समय स्टेडियम में सबसे पहले ग्रीस की टीम प्रवेश करती है। उसके बाद मेजबान देश की भाषानुसार वर्षामाला के क्रम से एक-एक करके दूसरे देशों की टीमें स्टेडियम में प्रवेश करती हैं जबकि मेजबान देश की टीम सबके बाद स्टेडियम में पहुंचती है। (लेखक स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं।)

## इन दिनों

# शेयर निवेश-मेडिकल शिक्षा क्षेत्र में कामयाबी की नई तस्वीर

**आर.के.सिन्हा**

बॉम्बे स्टाक एक्सचेंज (बीएसई) के मुताबिक, नये डीमैट खाते खोलने में यूपी ने महाराष्ट्र के अलावा भी सभी अन्य राज्यों को पीछे छोड़ दिया। इस तरह यूपी की एक साल में 37% की बढ़त हुई है। इसी अवधि में महाराष्ट्र की ग्रोथ 20%, गुजरात की 15%, राजस्थान की 26% और कर्नाटक की 20% ही रही है। शेयर बाजार में यूपी की ठसक लगातार ही बढ़ रही है। शेयर बाजार के गढ़ महाराष्ट्र को ही यूपी वालों ने सीधी टक्कर दे दी है। बीएसई के मुताबिक एक साल में यूपी से 35 लाख नये निवेशकों ने शेयर बाजार में प्रवेश किया है। हालांकि एक समय था जब महाराष्ट्र और कर्नाटक दोनों राज्यों को शेयर बाजार की जान माना जाता था। शेयर बाजार में यूपी के बढ़ते कदम के लिए राज्य की जनता की आय बढ़ने, महिलाओं का बाजार में रुझान और जोखिम की क्षमता उठाने की प्रकृति प्रमुख वजहें हैं। शेयर बाजार के कुल कारोबार में सालाना 1.28 लाख करोड़ का धंधा मात्र यूपी से हो रहा है। इसमें भी 30% की वृद्धि हुई है। इस बीच, अगर हम बीते कुछ सालों पर नजर ढालें तो यूपी से 2021-22 में 92 लाख निवेशक थे। यह अंकड़ा 2022-23 में हो गया 1.27 करोड़। दूसरी खबर नीट-यूजी से जुड़ी है। डॉक्टरी शिक्षा में दाखिले के लिए आयोजित इस परीक्षा में यूपी के अभ्यार्थियों ने सर्वाधिक बाजी मारी। इस वर्ष के परिणाम में सबसे ज्यादा संख्या यूपी के विद्यार्थियों की रही। महाराष्ट्र और राजस्थान दूसरे और तीसरे स्थान पर रहे। इन दोनों खबरों ने बदलते हुए उत्तर प्रदेश में हो रहे विकास की प्रत्यक्ष तस्वीर हमारे सामने रख दी है। इस बीच नेशनल टेरिस्टिंग एजेंसी (एनटीए) के नीट-यूजी रिजल्ट में इस साल सबसे अधिक यूपी के स्टूडेंट पास हुए हैं। इसके बाद महाराष्ट्र और राजस्थान का स्थान है। लगभग 20.38 लाख में से कुल 11.45 लाख परीक्षार्थियों ने परीक्षा उत्तीर्ण की है। बात संख्या की करें तो यूपी की इस सफलता का वजन और चमक दोनों ज्यादा महसूस होगा। यूपी में सबसे अधिक 1.39 लाख, महाराष्ट्र में 1.31 लाख और राजस्थान में एक लाख से अधिक परीक्षार्थियों ने परीक्षा उत्तीर्ण की है। उत्तर प्रदेश और महाराष्ट्र देश के दो सबसे अधिक आबादी वाले राज्य हैं, जबकि राजस्थान भी जनसंख्या के मामले में शीर्ष पांच में केरल और कर्नाटक दो अन्य राज्य हैं, जिनमें से प्रत्येक ने 75,000 से अधिक अभ्यार्थियों ने परीक्षा उत्तीर्ण की है। नीट-यूजी देश की बड़ी और प्रतिष्ठित प्रतियोगिता परीक्षा है। यह परीक्षा भारत के बाहर 14 शहरों-आबूधाबी, बैंकॉक, कोलंबो, दोहा, काठमांडू, कुआलालंपुर,

**भलाई करना कर्तव्य नहीं,  
आनंद है, क्योंकि यह  
तुम्हारे स्वास्थ्य और सुख में  
नहीं है।**



संग्रह संक्षेप

A portrait of a smiling man with glasses and a yellow shirt, holding a microphone.

आर.के.सिन्हा

बॉम्बे स्टाक एक्सचेंज  
(बीएसई) के मुताबिक,  
नये डीमैट खाते खोलने में  
यूपी ने महाराष्ट्र के  
अलावा भी सभी अन्य  
राज्यों को पीछे छोड़  
दिया। यूपी की एक साल  
में 37% की बढ़त दर्द है।

धर्म ज्ञान

लागोस, मनामा, मस्कट, रियाद, शारजाह, सिंगापुर, दुबई और कुवैत सिटी में आयोजित की गई थी। गोरतलब है कि नीट-यूजी के अंकों के आधार पर चिकित्सा पाठ्यक्रमों में प्रवेश दिया जाता है। परीक्षा 13 भाषाओं असमिया, बांग्ला, अंग्रेजी, गुजराती, हिंदी, कनड़, मलयालम, मराठी, ओडिया, पंजाबी, तमिल, तेलुगु और उर्दू में आयोजित की गई थी। बेशक, मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व वाली सरकार के लिए भी यह बड़ी उपलब्धि है।







